क्या तेंदुओं की लव स्टोरी होती है?

डॉ. चन्द्रशीला गुप्ता

गत दिनों म.प्र. के मंदसौर ज़िले के रेवास-देवड़ा ग्राम में एक तेंदुए का काफी आंतक छाया हुआ था। ज़िंदा पकड़ने में असफल रहने पर अंत में उसे मारना पड़ा। कुछ ही दिनों बाद एक अन्य तेंदुआ गांव पर आक्रमण करने लगा। गांव वालों का ख्याल था कि वह मादा थी। लोगों के ख्याल की वजह यह थी कि उन्हीं दिनों एक मादा तेंदुआ अपने बच्चों के साथ आसपास के जंगल में नज़र आ रही थी। तुरंत यह किस्सा फैल गया कि पहले वाला नर तेंदुआ इसका जोड़ीदार था और यह उसकी हत्या का बदला लेने के लिए आक्रमण कर रही है। बात और फैली तो एक खबरिया (अन्धविश्वास फैलाने वाली) चैनल ने नाग-नागिन की तरह तेंदुए की भी एक लव स्टोरी बना डाली। चैनल को तो एक मसालेदार किस्सा मिल गया।

क्या सचमुच तेंदुए जोड़ी बनाते हैं? आइए इनकी जीवनचर्या की पड़ताल करते हैं।

तेंदुआ जिसे प्राणी शास्त्री *पेन्थेरा पार्डस* कहते हैं समस्त बड़ी बिल्लियों में सबसे छोटा है। यह करीब 7 फीट लंबा व 3 फीट ऊंचा होता है। इसका अधिकतम भार 90 कि.ग्रा. है लेकिन औसतन 50 कि.ग्रा. ही होता है। इसकी खाल का रंग मटमैला पीला होता है। गर्मियों में इसका रंग सूखे क्षेत्रों में हल्का व घने जंगलों में गहरे रंग का हो जाता है। खाल पर काले चकत्ते बने होते हैं जिनके बीच का पीला रंग खाल से ज़्यादा गहरा होता है। चकत्ते पूर्वी अफ्रीका में गोल व दक्षिण अफ्रीका में चौकोर होते हैं। इसका कंकाल इस तरह से आपस में जुड़ा रहता है कि इसमें स्प्रिंग की तरह उछलने की अद्भुत क्षमता होती है। साथ ही इसकी बनावट बड़ी शॉकप्रूफ रहती है। यह चाहे जितनी ऊंचाई से पेड़ से कूद जाए, इसे चोट नहीं लगती।

तेंदुए विभिन्न आवासों में आसानी से अनुकूलित हो जाते हैं। इसी अनुकूलता के चलते वे मानव हस्तक्षेप से उजड़ते जंगलों के बावजूद अभी तक काफी संख्या में मौजूद हैं। पहाड़ व नदी वाले जंगलों में झाड़ियां इनका पंसदीदा स्थान हैं, लेकिन ये गर्म व ठंडे क्षेत्रों में भी पाए जाते हैं। ये मूलतः निशाचर हैं। दिन में पेड़ की मोटी झाड़ियों पर आराम फरमाते हैं। धब्बेदार खाल से इन्हें पृष्ठभूमि में घुल-मिल जाने में सुविधा होती है।

ये संपूर्ण भारत के अलावा पूरे अफ्रीका व एशिया में कॉकेशियस, ईरान, चीन, कोरिया, साइबेरिया तथा मानचुरिया में पाए जाते हैं। इस प्रकार तेंदुए पूरी बड़ी बिल्ली परिवार में सर्वाधिक विस्तृत क्षेत्र में पाए जाते हैं। इसी वजह से इनके फर में भी विभिन्न अनुकूलताएं हैं। साइबेरियन प्रजाति के बहुत मोटे फर से लेकर शीतोष्ण प्रजातियों में एकदम छोटे फर तक पाए जाते हैं। गहरे रंग के फर वाली प्रजाति ब्लेक पेन्थर घनी वर्षा वाले क्षेत्रों में पाई जाती है। प्लीस्टोसीन काल में तेंदुआ वर्तमान से ज़्यादा बड़े क्षेत्र, दक्षिणी युरोप में स्पेन तक फैला हुआ था।

जनन काल को छोड़कर शेष समय तेंदुआ एकल जीवन जीता है। गर्भ काल 90-95 दिन का होता है। शावकों की खाल जन्म से ही फरयुक्त होती है। जन्म के समय आंखें बंद होती हैं जो करीब 10 दिन बाद खुलती हैं। वैसे तो एक बार में 2-3 बच्चे पैदा होते हैं, लेकिन अधिकतम 5 तक की संख्या ज्ञात है। बच्चों के 2 वर्ष का होने तक परिवार साथ रहता है बाद में नया जोड़ा बनाया जाता है। बच्चों के चलने-फिरने लायक होने तक मादा ज़्यादा घूमती नहीं है। पहले 8 हफ्तों तक उन्हें छुपाकर रखती है। 6-7 हफ्तों का होने पर उन्हें ठोस आहार यानी मांस देना शुरू करती है। वैसे दूध पिलाना 3 माह बाद भी जारी रहता है।

चिड़ियाघरों में ये 23 वर्ष तक जीते देखे गए हैं लेकिन जंगलों में संभवतः ये 12-15 वर्ष ही जीते हैं। तेंदुआ अपना इलाका चिन्हित करके रखता है। वैसे इलाके की सीमाएं एक-दूसरे के क्षेत्र में चली जाती हैं। नर का इलाका बड़ा

होता है उसी में अनेक मादाओं के छोटे इलाके शामिल रहते हैं। तेंदुए अपना इलाका निरंतर बदलते रहते हैं। वे शायद ही कभी 3-4 दिन से ज़्यादा एक क्षेत्र में रहते हों। इलाके का निर्धारण पेशाब व पंजों के निशान से किया जाता है। अन्य तेंदुओं को अपनी उपस्थिति का एहसास खखारकर करवाया जाता है। तेंदुए गुर्राने के अलावा कभी-कभी दहाड़ते भी हैं।

पूरे बड़ी बिल्ली कुल में तेंदुआ सबसे चालाक शिकारी है। भोजन पाने के लिए सभी तरीके अपनाता है। ज़रूरत के मुताबिक नए तरीके भी सीखता रहता है। कभी-कभी ये ज़मीन पर गोल-गोल लुढ़कते हुए हिरणों के झुंड के समीप पहुंचते हैं। हिरण हैरान होकर इन्हें देखते रह जाते हैं। इसी बीच ये एकाध हिरण को दबोच लेते हैं। तेंदुए के शिकार तीव्र गंध वाले प्राणी - रेप्टाइल्स, पक्षियों से लेकर चूहे, खरहे, बारहसीगें, बंदर व बैबून भी हैं। हमारे देश में इनका प्रिय शिकार बारहसिंगा है। वैसे शेर इनके शिकार छीन ले जाते हैं। इसीलिए ये अपने शिकार को पेड़ की ऊंची डालियों तक खींचकर ले जाते हैं ताकि आराम से सुरक्षित भोजन कर सकें ।

ये अपने से भी ज़्यादा वज़नी शिकार को पेड़ की ऊपरी शाखा तक खींचकर ले जाते देखे गए हैं। इन्हें कुत्ते का मांस भी बेहद पसंद है जिसके लिए ये बंगलों में प्रवेश करने का जोखिम भी उठाते हैं। हमारे यहां इनकी औसत खुराक एक चीतल प्रति 2 सप्ताह आंकी गई है। सूअर, हिरण, बैबून आदि को खाकर तेंदुए इनकी संख्या को नियंत्रण में रखते हैं। इससे फसलें नष्ट होने से बची रहती हैं।

नरभक्षी तेंदुआ शेर से ज़्यादा खतरनाक होता है। अभी तक का रिकॉर्ड रुद्रप्रयाग के एक नरभक्षी तेंदुए द्वारा 125 लोगों को मारे जाने का है। हालांकि तेंदुए में नरभक्षिता कभी-कभार ही होती है। आम तौर पर यह बूढ़े अथवा घायल तेंदुओं में ही देखी गई है। ऐसे में मानव जैसे धीमे प्राणी के शिकार में इन्हें आसानी होती है।

तेंदुए का शिकार हमेशा से मानव शगल रहा है। वस्त्रों के लिए उसकी खाल बेहद पसंद की जाती है। अंधविश्वासी कर्मकाण्डों के लिए इनके पूंछ, पंजे, नाखून आदि इस्तेमाल किए जाते हैं। यही वजह है इनके दाम अच्छे मिलते हैं और इनकी तस्करी की जाती है। अफ्रीका में इन्हें बुद्विमानी का प्रतीक मानकर पूजा जाता है। ***(स्रोत फीचर्स)***

अगले अंक में

स्रोत नवंबर 2008
अंक 238

- **वसा की गुणवत्ता का असर लड़कियों पर**
- **बदल गया लंबाई का मात्रक**
- **भाग्यवाद को बढ़ावा देता भारतीय मीडिया**
- **भारत को मिले कुल तीन पदक**
- **क्या संदिग्ध आंतकवादी जीव विज्ञान न पढ़े?**